दो हाथ

लेखक:
इस्मत चुग़तई

चित्राँकन:
शुद्धसत्व बसु

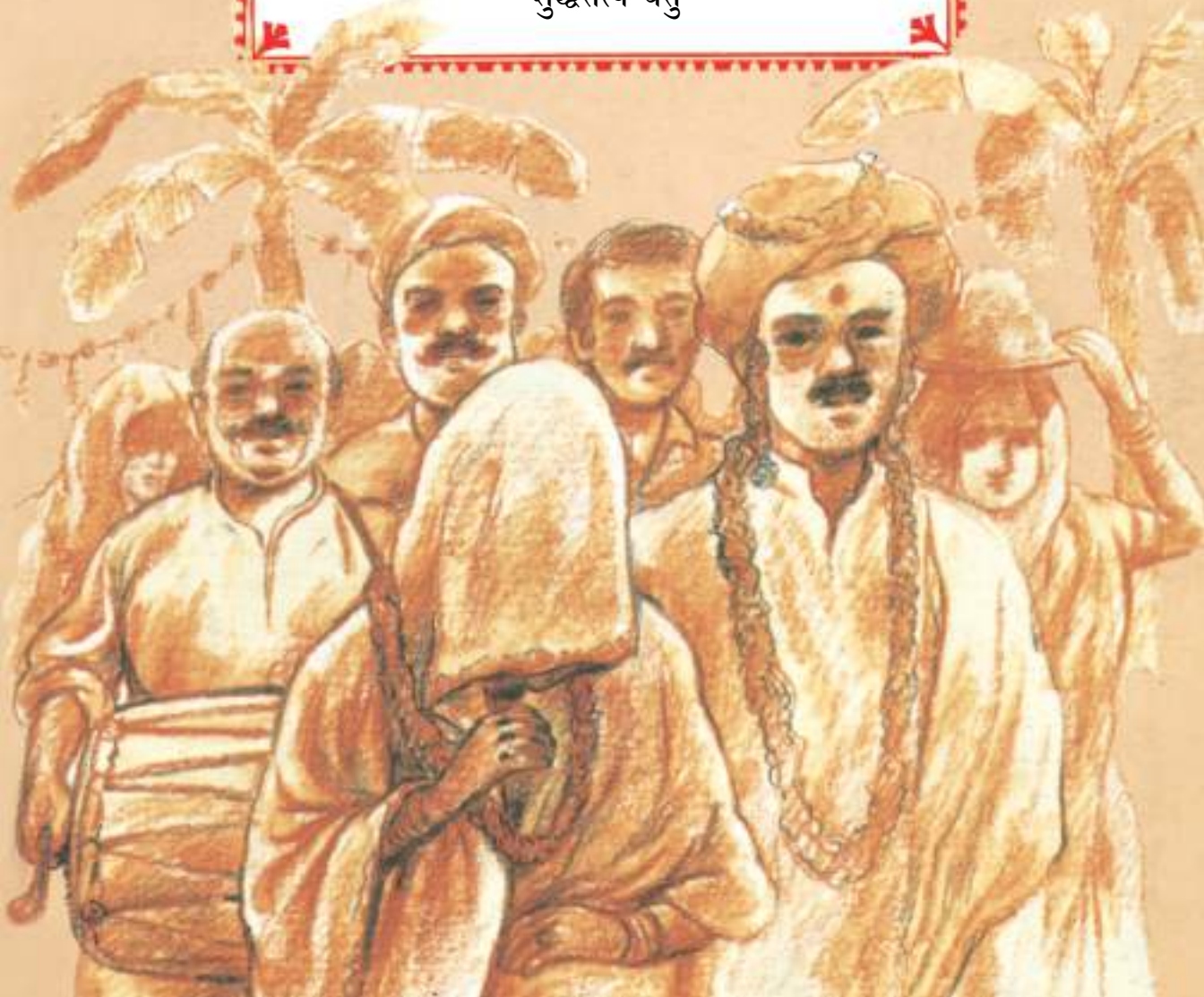

दो हाथ

लेखक

इस्मत चुग़तई

चित्राँकन

शुद्धसत्व बसु

(मूल उर्दू भाषा से अनूदित)

कथा, नई दिल्ली

इस्मत चुग़तई

उर्दू कथा साहित्य में इस्मत चुग़तई जी की एक अपनी पहचान है। उन्होंने समाज की रूढ़िवादी परम्परा को कभी भी स्वीकार नहीं किया। अपनी कहानियों में उन्होंने सामाजिक सच्चाईयों को इस प्रकार बयान किया है कि उन्हें नकारा नहीं जा सकता। उनके कुछ प्रमुख उपन्यास हैं, *जिद्दी*, और *टेढ़ी लकीर*।

KATHA

पहला संस्करण 1998, दूसरा संस्करण 2004, तीसरा संस्करण 2009
चौथा संस्करण 2010, पाँचवाँ संस्करण 2010
कृति स्वामित्व © कथा, 1998
सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।
नई दिल्ली द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-85586-65-6

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है, बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना।

ए-3 सर्वोदया एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नई दिल्ली–110017
दूरभाषः 2652 4350, 2652 4511
फैक्सः 2651 4373
ई मेलः kathakaar@katha.org
इंटरनेटः http://www.katha.org

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है।
इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

बूढ़ी मेहतरानी की आँखों में आँसू टिमटिमा रहे थे। उसका बेटा, राम अवतार, जो घर आ रहा था।

पूरे तीन साल बाद!

शादी के पहले ही साल फौज से उसका बुलावा आ गया था। उस दिन के बाद, अब कहीं आना हो रहा था।

मुहल्ले के सभी लोग राम अवतार की राह देख रहे थे। सबको उसके लौटने के बाद होने वाले, ड्रामे का इंतज़ार था।

माना, राम अवतार लाम पर तोप-बन्दूक छोड़ने नहीं गया। फिर भी सिपाहियों का मैला उठाते-उठाते उसमें कुछ सिपाहियाना अकड़ तो पैदा हो ही गई होगी। ऐसा कैसे हो सकता है कि वह अपनी बीवी की करतूत सुने और उसका खून न खौले!

जब शादी करके आई थी तो क्या मुसमसी थी, गोरी। जब तक राम अवतार रहा, उसका घूँघट, फुट-भर लम्बा रहा। जिस दिन पति लाम को गया, तो कैसे बिलख-बिलख कर रोई थी। थोड़े दिन रोई-रोई आँखें लिए, सिर झुकाए मैले की टोकरी उठाती रही।

फिर धीरे-धीरे उसके घूँघट की लम्बाई, कम होती गई। राम अवतार के जाते ही सब कुछ, बदल-सा गया। बात-बात पर ही-ही, हर वक्त इठलाना। कमर पर मैले की टोकरी लेकर, काँसे के कड़े छनकाती जिधर से निकलती, लोगों की जान ही निकल जाती। धोबी के हाथ से साबुन की बट्टी फिसलकर, तालाब में गिर जाती। रसोइया तवे पर जलती हुई रोटी छोड़ देता। भिश्ती का डोल कुँए में डूबता ही चला जाता।

नाम की गोरी, थी पूरी काली। चौड़ी फुकना-सी नाक, फैला हुआ दहाना और दाँत ऐसे, जैसे कभी मंजन ही न देखा हो। आँखों में काजल थोपने के बाद भी, दाईं आँख का भैंगापन छुपता न था। कमर भी लचकदार न थी। झूठन खा-खाकर, चौड़ी हो रही थी।

लेकिन फिर भी जहाँ से निकल जाती, क़यामत ही आ जाती।

राम अवतार के जाने के बाद, बूढ़ी मेहतरानी का सारा काम बहू ने संभाला। बहू के दोनों हाथों के भरोसे ही उसका सारा बुढ़ापा बीत रहा था। बहू के करम बुढ़िया से छिपे न थे। पर बुढ़िया में इतना दम कहाँ कि दो सौ रुपये में लाई गई बहू को, वापिस भेज दे। उसका बाप तो चार सौ में उसकी दूसरी शादी करा देगा। लेकिन बुढ़िया कैसे संभालेगी पूरे मुहल्ले का काम। यह सोच वह चुप रहती।

दो-चार दिन के बाद बूढ़ी मेहतरानी के देवर का लड़का रतीराम उससे मिलने आया। फिर वहीं रह गया। दो-चार कोठियों में काम बढ़ गया था, वह उसने संभाल लिया। अपने गाँव में, आवारा ही तो घूमता था।

रतीराम के आते ही, सारा मौसम बदल गया। बहू के कहकहे बंद हो गए। काँसे के कड़े, गूँगे हो गए। घूँघट झूलते-झूलते, नीचे की ओर बढ़ने लगा। अब वह एक शरमीली-सी बहू बन गई थी।

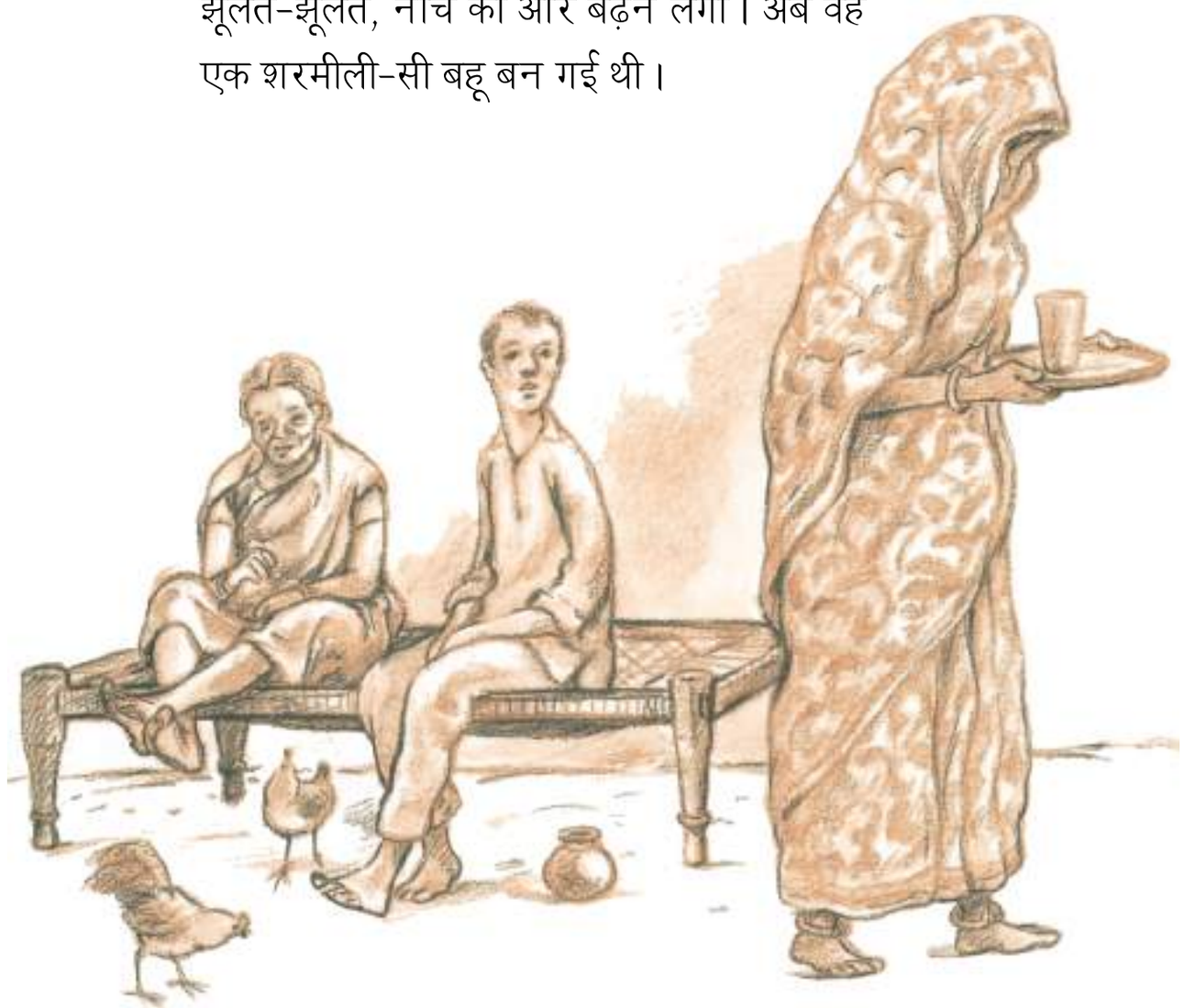

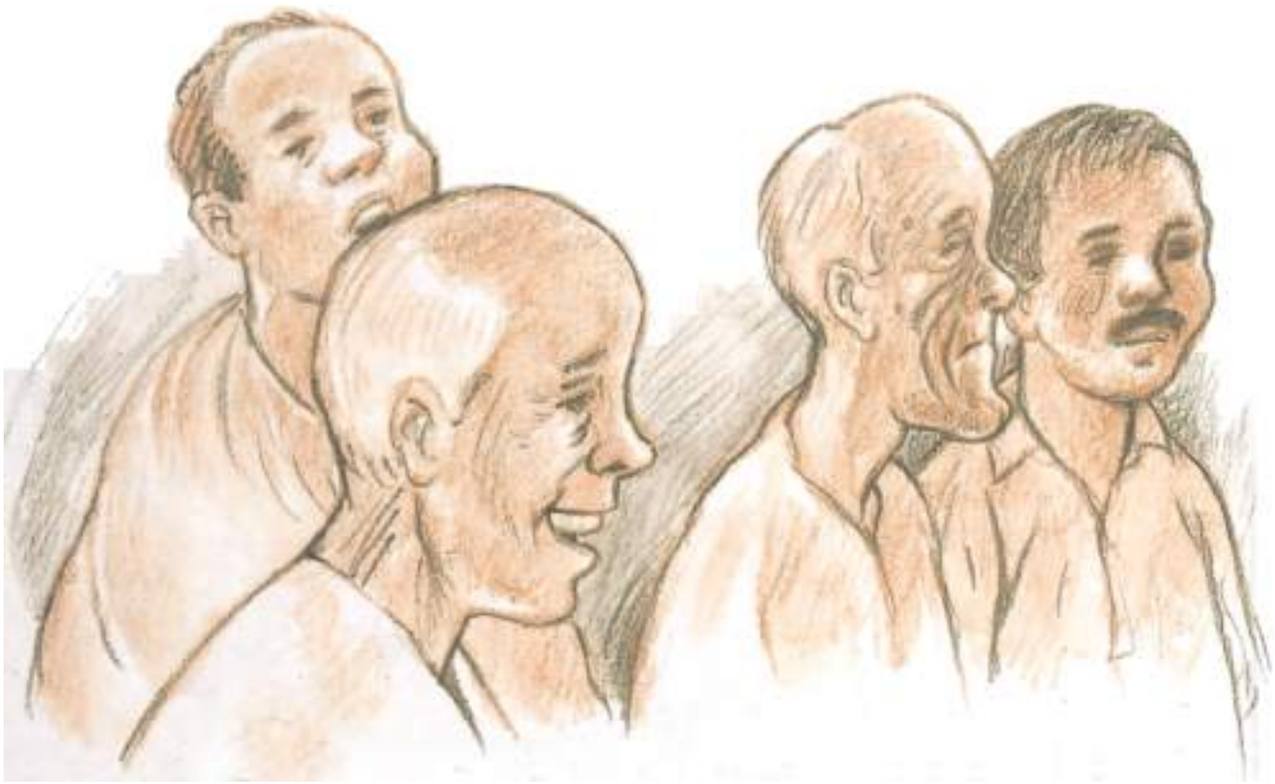

फिर एक दिन दाढ़ीवाले दारोग़ाजी ने, बहू और रतीराम के गलत संबंधों के बारे में सबको बताया। बूढ़ी मेहतरानी को बुलाया गया। पूछने पर बुढ़िया ने उल्टे शोर मचाया। कहने लगी कि लोग बेकार उसके दुश्मन बन गए हैं। चूँकि राम अवतार नहीं है, तो लोग उसकी बहू को बुरी नज़र से देखते हैं। बहू बेचारी तो सुबह-शाम अपने पति की याद में, आँसू बहाया करती है। जान तोड़कर काम-काज करती है। किसी को भी शिकायत का अवसर नहीं देती।

कुछ दिन के बाद, बहू के प्यार के चर्चे कम होने लगे। लोग कुछ-कुछ भूलने लगे। मगर ताड़ने वालों ने ताड़ ही लिया, कि दाल में कुछ काला है। बहू का दिन-ब-दिन मोटा होता शरीर, लोगों से ज़्यादा दिन नहीं छुपा रह सका। लोगों ने बुढ़िया को समझाया, "इससे पहले कि राम अवतार लौटे, बहू का इलाज करवा डाल। दो दिन में सफाई हो सकती है।"

पर न जाने बुढ़िया को क्या हो गया था। जिस बला को आसानी से कूड़े में दफना सकती थी, उसे आँख मीचे पलने दे रही थी।

कुछ दिनों बाद बहू ने एक बेटे को जन्म दिया। लोगों को तब बहुत हैरानी हुई, जब उसे ज़हर देने के बजाय खुशी से बुढ़िया की बाँछे खिल गई। राम अवतार के जाने के दो साल बाद पोता होने पर, वह बिल्कुल भी हैरान न थी। झट राम अवतार को चिट्ठी लिखवाई, "राम अवतार को ढेर सारा प्यार। यहाँ सब कुशल है। खबर यह है कि तुम्हारे घर में पूत पैदा हुआ है। सो तुम इस ख़त को तार समझो और जल्दी से आ जाओ।"

लड़का करीब साल-भर का होगा, जब राम अवतार लौटा। उसे देखते ही बुढ़िया, उसकी कमर से लिपटकर रोने लगी। राम अवतार लड़के को देखकर ऐसे शरमाने लगा, जैसे वही उसका बाप हो। झट सन्दूक खोलकर उसमें से लाल बनियान और पीले मोज़े निकालने लगा।

राम अवतार की इस हरकत पर लोगों को हैरानी से ज़्यादा गुस्सा आया।

"क्यों भई, तू तीन साल बाद लौटा है, न?"

"मालूम नहीं हजूर, थोड़ा कम-ज़ियादा ... इत्ता ही रहा होगा।"

"इधर लड़का साल-भर का है।"

"इत्ता ही लगे है, पर है बड़ा बदमाश!" राम अवतार शरमाया।

"अब तू खुद ही हिसाब लगा ले।"

"अब ... क्या लगाऊँ सरकार!"

"अरे बेवकूफ! यह हुआ कैसे?"

"अब जे मैं क्या जानूँ, सरकार। भगवान की देन है।"

"भगवान की देन! तेरा सर ... यह लड़का तेरा नहीं हो सकता।"

"तो अब का करूँ सरकार ... गोरी को मैंने बड़ी मार दी," वह गुस्से से बिफरकर बोला ।

"अरे ... निकाल बाहर क्यों नहीं करता उसको?"

"नहीं सरकार, कहीं ऐसा हो सके है?" राम अवतार घिघियाने लगा।

"क्यों भई?"

"हजूर, ढाई-तीन सौ फिर दूसरी सगाई के लिए कहाँ से लाऊँगा और बिरादरी जिमाने में सौ-दो सौ अलग खर्च हो जाएँगे।"

"क्यों भई, तुझे बिरादरी क्यों खिलानी पड़ेगी? बहू की बदमाशी का फल तुझे क्यों भुगतना पड़ेगा?"

"जे मैं न जानूं सरकार, हमारे में ऐसा ही होवे है।"

"मगर लड़का तेरा नहीं राम अवतार ... उस हरामी रतीराम का है।"

"तो क्या हुआ सरकार ... मेरा भाई होता है रतीराम, कोई ग़ैर नहीं, अपना ही खून है।"

"बिल्कुल बेवकूफ है तू।"

"सरकार, लड़का बड़ा हो जाएगा, मेरा हाथ बँटाएगा," राम अवतार ने गिड़गिड़ाकर समझाया। "वह दो हाथ लगाएगा, सो अपना बुढ़ापा पार हो जाएगा।"

और न जाने क्यों, राम अवतार के साथ सबका सिर झुक गया। मानों दिलों में लाखों करोड़ो हाथ छा गए हों- हाथ, जो न हरामी है और न हलाली। ये तो बस जीते जागते हाथ हैं, जो दुनियाँ का बोझ कम कर रहे हैं।

कहानी के कठिन शब्दों के अर्थ

नीचे दिए गए चौकोर खानों में, इसी कहानी से लिए गए कुछ शब्द हैं। इन शब्दों के सरल अर्थ गोल-से आकार में दिए गए हैं। क्या आप इन शब्दों और इनके अर्थ को मिला सकते हैं? सही उत्तर के लिए इस पृष्ठ के अंत में देखें। इन शब्दों को समझने के बाद अपनी बोलचाल की भाषा में प्रयोग करने का प्रयास करें।

नाटक

इंतज़ार

चुग़ली

ड्रामा

राह देखना

आफ़त

क़यामत

ऐसी बात या वस्तु जो नीति के विरोध में हो

ग़ैर

हराम

अवसर

दिल

काम

बला

चाल, नटखटपन

शिकायत

दुश्मन

ज़मीन में दबा देना

दफ़नाना

पत्र, चिट्ठी

मौका

ख़त

प्रलय

करतूत

शत्रु

हृदय

हरकत

पराया

उत्तर: ड्रामा - नाटक; इंतज़ार - राह देखना; क़यामत - प्रलय; दुश्मन - शत्रु; शिकायत - चुग़ली; अवसर - मौका; बला - आफ़त; दफ़नाना - ज़मीन में दबा देना; ख़त - पत्र, चिट्ठी; ग़ैर - पराया; हृदय - दिल; हराम - ऐसी बात या वस्तु जो नीति के विरोध में हो; करतूत - काम; हरकत - चाल, नटखटपन

फौजी राम अवतार तीन साल बाद बाद घर आ रहा है। मुहल्ले के सभी लोग उसकी राह देख रहे हैं, सबको होने वाले ड्रामे का इंतज़ार है ...। व्यंगात्मक रूप में यह कहानी, समाज के खोखलेपन को दर्शाती है।

सर्वश्रेष्ठ कथामाला भारत के महान लेखकों की एक शानदार कहानी श्रृंखला है। आइऐ अपने देश के साहित्य का खजाना खोजें, इन कहानियों और इनसे जुड़े खेलों और अभ्यासों के ज़रिए!

इस पुस्तक की कहानी सुप्रसिद्ध लेखिका **इस्मत चुग़तई** ने लिखी है।